रविवार मई 07, 2017
2 तीमुथियुस श्रृंखला
अध्याय 1: हमारे प्रभु की गवाही देने में लज्जित न हों

[लाइफ ग्रुप स्टडी गाइड (जीवन समूह अध्ययन मार्गदर्शिका): इस रविवार से, लाइफ ग्रुप स्टडी गाइड रविवार के संदेश नोट्स के अंत में होगा। यह हमारे लिए लाइफ ग्रुप्स में उपयोग करने हेतु है]

2 तीमुथियुस का परिचय

जब पौलुस रोम लौटा, तब उसे दूसरी बार लगभग ईसा पश्चात 67-ईसा पश्चात 68 के बीच बन्दी बनाया गया। बन्दीगृह में रहते हुए और मृत्यु निकट जानकर, पौलुस ने अपनी अंतिम पत्री 2 तीमुथियुस लिखी, जो विश्वास में उसके पुत्र के लिए अंतिम निर्देशों के समान थी। उसने राज्य के कार्य के लिए नियुक्त किए गए अन्य लोगों के विषय में भी विवरण दिया और तीमुथियुस से शीघ्र आने का अनुरोध किया। इस पत्री को लिखने के थोड़े समय बाद ही पौलुस शहीद कर दिया गया, लगभग ईसा पश्चात 68 में। परम्परा के अनुसार उसका सिर काटा गया। क्योंकि वह रोमी नागरिक था, इसलिए यह सम्भावना बहुत कम है कि उसे किसी और प्रकार से मृत्यु दण्ड दिया गया हो।

हमने अभी-अभी 1 तीमुथियुस का अध्ययन और पठन पूरा किया है, जो पौलुस द्वारा तीमुथियुस को इफिसुस में विश्वासियों की स्थानीय सभा का नेतृत्व करने के विषय में दिए गए निर्देश थे। 2 तीमुथियुस अधिक व्यक्तिगत है, जहाँ पौलुस तीमुथियुस के साथ इस विषय में विशेष निर्देश साझा कर रहा है कि परमेश्वर के सेवक के रूप में उसे अपना जीवन कैसे बिताना चाहिए।

2 तीमुथियुस अध्याय 1 पढ़ें

अब आइए इस अध्याय को समझें।

2 तीमुथियुस 1:1,2

1 पौलुस की ओर से जो, उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह यीशु में है, परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है,

2 प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम: परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह और दया और शान्ति मिलती रहे।

पौलुस अपनी निकट आने वाली मृत्यु के प्रति पूरी तरह सचेत है, जैसा कि वह इस पत्री में आगे उल्लेख करता है। फिर भी, वह इस सत्य पर दृढ़ बना रहता है कि हमें यीशु मसीह में जीवन की प्रतिज्ञा दी गई है (यूनानी शब्द *जोए* (*zoe*), अर्थात् अनन्त जीवन, परमेश्वर के प्रकार का जीवन)।

अनुग्रह, दया और शान्ति हमें हमारे परमेश्वर से प्राप्त होती है। वही स्रोत है, वही देने वाला है, वही हमारे जीवनों को अनुग्रह, दया और शान्ति से आशीषित करता है।

2 तीमुथियुस 1:3
जिस परमेश्‍वर की सेवा मैं अपने बापदादों की रीति पर शुद्ध विवेक से करता हूँ, उसका धन्यवाद हो कि मैं अपनी प्रार्थनाओं में तुझे लगातार स्मरण करता हूँ,

मैं शुद्ध विवेक से परमेश्वर की सेवा करता हूँ—अपनी पिछली पत्री में पौलुस ने "शुद्ध/अच्छे विवेक" पर कम से कम तीन बार जोर दिया था। और अब वह वही बात कहता है, इस संबंध में कि वह किस प्रकार परमेश्वर की सेवा करता आया है। हम सब के लिए जो परमेश्वर की सेवा करना चाहते हैं, यह कितना बड़ा पाठ है—कि हम परमेश्वर की सेवा साफ/अच्छे/शुद्ध विवेक के साथ करें। हम केवल तभी शुद्ध विवेक रख सकते हैं जब हम परमेश्वर और मनुष्यों के सामने सही जीवन जीते हैं।

पौलुस के पूर्वज—अब्राहम, इसहाक, याकूब और उनकी वंशावली में आने वाले अन्य लोग—परमेश्वर और मनुष्यों के सामने धार्मिकता से चलते थे, और उस प्रकाशन के अनुसार जीवन बिताते थे जो उन्हें उस समय प्राप्त था।

तीमुथियुस के प्रति पौलुस का स्नेह इतना महान था कि वह अपनी प्रार्थनाओं में निरन्तर उसका स्मरण करता था।

2 तीमुथियुस 1:4,5
4 और तेरे आँसुओं की सुधि कर करके रात दिन तुझ से भेंट करने की लालसा रखता हूँ कि आनन्द से भर जाऊँ।
5 मुझे तेरे उस निष्कपट विश्‍वास की सुधि आती है, जो पहले तेरी नानी लोइस और तेरी माता यूनीके में था, और मुझे निश्‍चय है कि तुझ में भी है।

"वह निष्कपट विश्वास" जो पीढ़ी दर पीढ़ी एक विरासत के रूप में आगे बढ़ाया जाता है।
परमेश्वर की यही इच्छा है (यशायाह 59:21)।

परन्तु यह अपने आप नहीं होता — हमें यह सुनिश्चित करने के लिए परिश्रम करना पड़ता है कि ऐसा हो। सबसे पहले हमें अपने बच्चों और पोते-पोतियों के सामने अपने जीवन के द्वारा यह उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए कि "निष्कपट विश्वास" प्रतिदिन के जीवन में कैसा दिखाई देता है।
कक्षा में बातें "सिखाई" जाती हैं। घर में अधिक बातें "सीखी" नहीं जातीं, बल्कि "पकड़ी" जाती हैं।

2 तीमुथियुस 1:6,7
6 इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूँ कि तू परमेश्‍वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला है प्रज्वलित कर दे।
7 क्योंकि परमेश्‍वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ्य और प्रेम और संयम की आत्मा दी है।

ऐसा प्रतीत होता है कि तीमुथियुस अपने सभी आत्मिक वरदानों का उपयोग करने में शायद संकोच कर रहा था, सम्भवतः अपने से बड़े लोगों के कारण भयभीत था। इसलिए 1 तीमुथियुस 4:12 में पौलुस तीमुथियुस को

प्रोत्साहित करता है कि वह अपनी "युवावस्था" को अपने लिए रुकावट न बनने दे, और उसे अपने वरदान का उपयोग करने के लिए भी उत्साहित करता है:

1 तीमुथियुस 4:14
उस वरदान के प्रति जो तुझ में है, और भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था, निश्चिन्त मत रह।

एक बार फिर अपनी दूसरी पत्री में पौलुस तीमुथियुस को प्रोत्साहित करता है कि वह अपने भीतर परमेश्वर के वरदान को "प्रज्वलित" करे।

प्रज्वलित = फिर से प्रज्वलित करना, जीवित और सक्रिय करना।

कुछ सरल तरीकों से हम परमेश्वर के वरदानों को जागृत करते हैं — आराधना और प्रार्थना में अधिक समय बिताकर, वचन में अधिक समय बिताकर, उन लोगों के साथ संगति करके जो समान वरदानों में प्रवाहित हो रहे हैं, और जो कुछ हमारे पास है उसका उपयोग करके।

...जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझ में है...

आत्मिक वरदान एक विश्वासी से दूसरे विश्वासी में प्रदान किए जा सकते हैं और सक्रिय किए जा सकते हैं (आरम्भ या प्रारम्भ कराए जा सकते हैं)।

जिस कारण हम परमेश्वर द्वारा दिए गए वरदानों को जागृत कर सकते हैं और उनमें आगे बढ़ सकते हैं, वह यह है कि पवित्र आत्मा, जिसे परमेश्वर ने हमें दिया है, हमें सामर्थ (*'दुनामिस'* dunamis), प्रेम (*'अगापे'* agape) और संयमित मन (आत्म-संयम, अनुशासन, संतुलन, स्वयं पर नियन्त्रण रखने की क्षमता) से भर देता है।

यह ध्यान देने योग्य है कि पौलुस परमेश्वर के वरदानों के उपयोग के संदर्भ में इन तीन बातों का उल्लेख करता है: सामर्थ, प्रेम और आत्म-संयम।

परमेश्वर के वरदानों का उपयोग परमेश्वर की सामर्थ्य में, परमेश्वर के प्रेम के साथ, और संयमित रीति से किया जाना चाहिए।

भय किसी भी प्रकार से हमें पीछे न हटाए।

2 तीमुथियुस 1:8
इसलिये हमारे प्रभु की गवाही से, और मुझ से जो उसका कैदी हूँ, लज्जित न हो, पर उस परमेश्वर की सामर्थ्य के अनुसार सुसमाचार के लिये मेरे साथ दु:ख उठा

जिस आत्मा को परमेश्वर ने हमें दिया है, उसके कारण प्रभु के विषय में बोलने से लज्जित न हों।

सच्चे परमेश्वर के सेवकों के साथ अपनी पहचान रखने से लज्जित न हों, चाहे वे मसीह के कारण दुःख ही क्यों न उठा रहे हों।
सुसमाचार के लिये दुःखों में सहभागी बनो।
परमेश्वर की सामर्थ्य (ड्यूनामिस, अर्थात् अद्‌भुत कार्य करने वाली सामर्थ्य) ही हमें सुसमाचार के लिये दुःख उठाने में अपना भाग लेने योग्य बनाती है।
यह परमेश्वर की अद्‌भुत कार्य करने वाली सामर्थ्य का एक और अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष है — सुसमाचार के लिये दुःखों (सताव, कठिनाइयों, विरोधों) को सहने की सामर्थ्य।

2 तीमुथियुस 1:9
जिसने हमारा उद्धार किया और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर उसके उद्देश्य और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है,

यह एक "गहन अर्थों से भरा" पद है। केवल इस एक पद में बहुत कुछ है।
यदि आप उद्धार पाए हुए हैं, तो आपको बुलाया भी गया है।
यह एक "पवित्र बुलाहट" है, अर्थात् पवित्रता और नैतिक शुद्धता का जीवन जीने के लिए बुलाहट।

परमेश्वर ने हमें अपने उद्देश्य और अनुग्रह के लिए बुलाया है।
बुलाहट, उद्देश्य, अनुग्रह
परमेश्वर हमें अपने उद्देश्य के लिए बुलाता है। और जिस बुलाहट और उद्देश्य के लिए उसने हमें बुलाया है, उसमें चलने के लिए वह हमें अनुग्रह भी देता है।
यह वह बात थी जिसकी योजना परमेश्वर ने समय के आरम्भ से पहले ही बना ली थी। यह सब बातों के विषय में परमेश्वर के पूर्वज्ञान को दर्शाता है (रोमियों 8:29)।

2 तीमुथियुस 1:10
पर अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रगट होने के द्वारा प्रकाशित हुआ, जिसने मृत्यु का नाश किया और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया।

प्रभु यीशु मसीह हमारे उद्धारकर्ता हैं।

उसने मृत्यु का नाश कर दिया है (अर्थात् उसे पूरी तरह और निश्चित रूप से समाप्त कर दिया) और उसके स्थान पर हमें जीवन (*'ज़ोए'* zoe) और अमरता (अविनाशिता, अनन्त अस्तित्व) सुसमाचार के द्वारा दी है।

यद्यपि मृत्यु पर जय प्राप्त कर ली गई है, और अब हमारे पास *'ज़ोए'* जीवन है (1 यूहन्ना 5:11,12), फिर भी हम पवित्रशास्त्र के अन्य अंशों से जानते हैं कि विश्वासियों के लिए अमरता का पूर्ण अनुभव करने हेतु पहले 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18 और 1 कुरिन्थियों 15:51-58 का पूरा होना आवश्यक है। यही सुसमाचार की अद्‌भुत आशीष है।

हम इस पद का उपयोग "अभी अमरता" की शिक्षा देने के लिए नहीं कर सकते, जैसा कि कुछ लोग गलत रूप से सिखाते हैं।

2 तीमुथियुस 1:11
जिस के लिये मैं प्रचारक, और प्रेरित, और उपदेशक भी ठहरा।

पौलुस अन्यजातियों के लिए अपनी बुलाहट को बताता है।

2 तीमुथियुस 1:12
इस कारण मैं इन दुःखों को भी उठाता हूँ, पर लजाता नहीं, क्योंकि मैं उसे जिस पर मैं ने विश्‍वास किया है, जानता हूँ; और मुझे निश्‍चय है कि वह मेरी धरोहर की उस दिन तक रखवाली कर सकता है।

मसीही बुलाहट "दुःख", कठिनाइयों, विरोध और सताव से रहित नहीं है।

इस अध्याय में पहले पौलुस ने तीमुथियुस को लज्जित न होने के लिए प्रोत्साहित किया था।

अब पौलुस स्वयं यह बताता है कि वह सुसमाचार के कारण दुःख उठाने में लज्जित क्यों नहीं है।
स्पष्ट रूप से, इस तथ्य के अतिरिक्त कि पौलुस पवित्र आत्मा द्वारा अलौकिक रीति से सामर्थी बनाया गया था, वह दो और कारण भी बताता है :
"...मैं जानता हूँ कि मैंने किस पर विश्वास किया है..."
"...मैं जानता हूँ कि वह मेरी धरोहर की रक्षा कर सकता है..." (जो मैंने उसके पास रखा है उसकी रक्षा करना)।

इस पद के दूसरे भाग का अनुवाद दोनों प्रकार से किया जा सकता है, और वास्तव में दोनों ही सत्य हैं :
वह उस वस्तु की रक्षा कर सकता है जिसे मैंने उसके हाथों में सौंपा है...
वह उस वस्तु की रक्षा कर सकता है जिसे उसने मुझे सौंपा है...

आपने किस पर विश्वास किया है?
आपका जीवन, वर्तमान और अनन्तकाल किसके हाथों में है?

2 तीमुथियुस 1:13
जो खरी बातें तू ने मुझ से सुनी हैं उनको उस विश्‍वास और प्रेम के साथ, जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श बनाकर रख।

यह परमेश्वर के सेवक के लिए एक महत्वपूर्ण निर्देश है।
भूल और धोखे से बचने की कुंजी यह है कि "खरे वचनों के आदर्श" में बने रहें, जिन्हें मैंने तुम्हें सिखाया है।

1 तीमुथियुस से हमें स्मरण है कि पौलुस ने तीमुथियुस को इफिसुस में नियुक्त करने का एक कारण यह था कि वह कलीसिया को उन सब प्रकार की झूठी शिक्षाओं से बचाए जो चारों ओर फैल रही थीं।

दूसरी बात, हमने 1 तीमुथियुस 4:1,2 में यह भी सीखा कि बहकाने वाली आत्माएँ दुष्टात्माओं की शिक्षाओं को जन्म देती हैं, जो कलीसिया में प्रवेश करने और लोगों को विश्वास से दूर करने का प्रयास करेंगी। कलीसिया

में शिक्षा सम्बन्धी अनेक गलतियाँ वास्तव में दुष्ट आत्माओं का कार्य होती हैं, जो भले अभिप्राय रखने वाले सेवकों के माध्यम से कार्य करती हैं, जो बहकाए या धोखा खाए हुए होते हैं।

इसलिए पौलुस एक बार फिर तीमुथियुस को स्मरण दिलाता है कि वह उन शिक्षाओं में बना रहे जो पौलुस ने उसे दी थीं।
इसे सरल बनाए रखो। यीशु मसीह में विश्वास और प्रेम में चलते रहो।

2 तीमुथियुस 1:14
और पवित्र आत्मा के द्वारा जो हम में बसा हुआ है, इस अच्छी धरोहर की रखवाली कर।

जो तुझे सौंपा गया है उसकी रक्षा पवित्र आत्मा की सहायता से कर (यह 1 तीमुथियुस 6:20 की पुनरावृत्ति है)।

तुम्हें अपने भीतर वचन की रक्षा करने के लिए भी पवित्र आत्मा की सामर्थ की आवश्यकता है।

वही अभिषेक जो हमारे भीतर है (1 यूहन्ना 2:20,27), हमें सिखाता है कि क्या सही है और क्या गलत।

2 तीमुथियुस 1:15
तू जानता है कि आसियावाले सब मुझ से फिर गए हैं, जिनमें फूगिलुस और हिरमुगिनेस हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि एशिया माइनर के बहुत से विश्वासियों ने पौलुस के बन्दी होने के कारण उसके साथ अपनी मित्रता और संगति छोड़ दी थी। फूगेलुस और हर्मुगिनेस दो ऐसे व्यक्तियों के नाम हैं, जिन्होंने सम्भवतः पौलुस के साथ अपनी मित्रता त्याग दी थी। हम इन दोनों के विषय में और कुछ नहीं जानते।

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि पौलुस ने इस अध्याय के आरम्भ में तीमुथियुस को दृढ़ता से प्रोत्साहित किया कि वह प्रभु के लिए बोलने या पौलुस के साथ जुड़े होने में लज्जित न हो।

2 तीमुथियुस 1:16-18
16 उनेसिफुरुस के घराने पर प्रभु दया करे, क्योंकि उसने बहुत बार मेरे जी को ठंडा किया और मेरी जंजीरों से लज्जित न हुआ।
17 पर जब वह रोम में आया, तो बड़े यत्न से ढूँढ़कर मुझ से भेंट की–
18 प्रभु करे कि उस दिन उस पर प्रभु की दया हो–और जो जो सेवा उसने इफिसुस में की है उन्हें भी तू भली भाँति जानता है।

उनेसिफुरुस का उल्लेख और कहीं नहीं मिलता, परन्तु इस व्यक्ति और उसके द्वारा पौलुस के लिए किए गए कार्य के विषय में यह कितनी अद्भुत गवाही है।
उसने इफिसुस में पौलुस की सेवा की।
वह रोम आया, उसने मुझे खोजा और रोम में ढूँढ़ निकाला।
उसने बहुत बार मुझे शान्ति पहुँचाई।
वह मेरी जंजीरों से लज्जित नहीं हुआ।

क्या हम भी उन लोगों के लिए ऐसा ही कुछ करेंगे जो सुसमाचार के कारण सताए जा रहे हैं?

इब्रानियों 13:1-3
1 भाईचारे की प्रीति बनी रहे।
2 अतिथि–सत्कार करना न भूलना, क्योंकि इसके द्वारा कुछ लोगों ने अनजाने में स्वर्गदूतों का आदर–सत्कार किया है।
3 कैदियों की ऐसी सुधि लो कि मानो उनके साथ तुम भी कैद हो, और जिनके साथ बुरा बर्ताव किया जाता है, उनकी भी यह समझकर सुधि लिया करो कि हमारी भी देह है।

<u>मुख्य सीख</u>

यद्यपि इस अध्याय में कई महत्वपूर्ण शिक्षाएँ हैं, फिर भी हम इस मुख्य बात पर विशेष जोर देना चाहते हैं :

2 तीमुथियुस 1:8
इसलिए हमारे प्रभु की गवाही से, और मुझ से जो उसका बन्दी हूँ, लज्जित न हो; पर परमेश्वर की सामर्थ के अनुसार सुसमाचार के लिए मेरे साथ दुःख उठा।

हमारे प्रभु की गवाही देने में लज्जित न हों!

सेवा का समय

लाइफ़ ग्रुप अध्ययन मार्गदर्शिका

रविवार मई 07, 2017
2 तीमुथियुस अध्याय 1

यह लाइफ ग्रुप चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के संदेश के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति वचन का करने वाला बन रहा है और अपने जीवन को परमेश्वर के पवित्र वचन पर बना रहा है। लाइफ ग्रुप की सभा सामान्यतः 2 घंटे की होती है। प्रत्येक लाइफ ग्रुप में लगभग 12-15 लोग होते हैं।

तैयारी
लाइफ ग्रुप बैठक की तैयारी के लिए, आप Sermon Key Points (पाँच मिनट में संदेश का सार) या पूरा रविवार का संदेश सुन सकते हैं। आप रविवार के संदेश के नोट्स भी देख सकते हैं। यह सभी "All Peoples Church Bangalore-ऑल पीपल्स चर्च बैंगलोर" मोबाइल ऐप में या ऑनलाइन **apcwo.org/sermons** पर उपलब्ध हैं। लाइफ ग्रुप बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत
लाइफ ग्रुप बैठक की शुरुआत प्रार्थना, आराधना और किसी मनोरंजक गतिविधि के समय से हो सकती है।

परमेश्वर के वचन को सुनें
निम्नलिखित शास्त्र खंड पढ़ें: *2 तीमुथियुस अध्याय 1*

मिलकर परमेश्वर के वचन की जाँच करें
कृपया इनमें से कुछ प्रश्नों पर मिलकर चर्चा करें, और लोगों को अपनी समझ साझा करने का अवसर दें। हम प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं कि समूह चर्चा के दौरान अपने व्यक्तिगत सीख को लिख लें।

#1, इस अध्याय में पौलुस तीमुथियुस को परमेश्वर के सेवक के रूप में जो-जो बातें करने के लिए प्रोत्साहित करता है, उनकी एक संक्षिप्त सूची बनाइए।

#2, इस अध्याय में पौलुस अपने विषय में परमेश्वर के सेवक के रूप में जो कुछ प्रकट करता है, उसकी एक सूची बनाइए।

यदि समय अनुमति दे, तो प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम तीन मिनट) लेकर एक या दो मुख्य सीख साझा करे और यह बताए कि वे इसे अपने विशिष्ट जीवन परिस्थितियों में कैसे लागू होते हुए देखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करते हुए संगति करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपने जीवन से संबंधित कुछ भी साझा करे—जो कुछ परमेश्वर उन्हें सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही, या कोई विशेष चुनौती जिसके लिए वे प्रार्थना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें—प्रार्थना और सेवकाई के द्वारा

दो या तीन लोगों के छोटे समूहों में बँट जाएँ और बारी-बारी से आज जो सीखा गया है उसके प्रकाश में परमेश्वर को धन्यवाद दें और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की अगुवाई सुनें। पवित्र आत्मा के वरदानों के बहने की अपेक्षा रखें—चंगाई, चमत्कारों की रिहाई, भविष्यवाणी आदि के द्वारा।

पुनः एकत्रित हों और इन विषयों के लिए मिलकर प्रार्थना करें:

1) *परिवारों की सुरक्षा और सुदृढ़ता के लिए*
2) *कलीसिया के रूप में हम पर परमेश्वर के पवित्र आत्मा का एक शक्तिशाली उंडेलाव हो, और हमारे द्वारा हमारे नगर और राष्ट्र में बहुतों को आशीष मिले। केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थी कार्य ही हमारे नगर और राष्ट्र को बदल सकता है।*
3) *BUILD TO IMPACT (प्रभाव के लिए निर्माण करें) परियोजना के लिए—भूमि की खोज और अधिग्रहण की प्रक्रिया में परमेश्वर के हाथ की अगुवाई के लिए, और इस परियोजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक वित्तीय प्रावधान के लिए।*

अंत में मिलकर परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए समाप्त करें।

उपयोगी संसाधन

हर रविवार सुबह 10:30 बजे (भारतीय समय, GMT+5:30) हमारी ऑनलाइन संडे चर्च सेवा का लाइव प्रसारण देखें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त आराधना, वचन और चंगाई, चमत्कार तथा छुटकारे की सेवा।
यूट्यूब:https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
वेबसाइट: https://apcwo.org/live

हमारी अन्य वेबसाइट्स और निःशुल्क संसाधन:
चर्च: https://apcwo.org
निःशुल्क संदेश: https://apcwo.org/resources/sermons
निःशुल्क पुस्तकें: https://apcwo.org/books/Hindi
दैनिक भक्ति-वचन: https://apcwo.org/resources/daily-devotional
यीशु मसीह: https://examiningjesus.com
बाइबल कॉलेज: https://apcbiblecollege.org
ई-लर्निंग: https://apcbiblecollege.org/elearn
वीकेंड स्कूल्स: https://apcwo.org/ministries/weekend-schools
काउंसलिंग: https://chrysalislife.org
संगीत: https://apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: https://pamfi.org
चर्च ऐप: https://apcwo.org/app
चर्चेस: https://apcwo.org/ministries/churches
विश्व मिशन: https://apcworldmissions.org